पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

एक कलाकार का प्रतिबद्ध मन : रामेश्वर सिंह काश्यप के संदर्भ में

अमित कुमार पासवान
पीएच.डी. शोधार्थी
सिक्किम विश्वविद्यालय,सिक्किम (भारत)
ईमेल- amit17hhma03@gmail.com

शोध सार : रामेश्वर सिंह काश्यप सिद्धहस्त नाटककार थे। बतौर कलाकार उन्होंने आम कलाकार की तरह केवल कलम ही नहीं चलाई, बल्कि जरूरत के अनुसार आंदोलनों मे भाग लेकर समाज और राजनीति को सार्थक दिशा प्रदान करने में अपनी भूमिका निभाई। वह बड़ा कलाकार होता है जो अपनी कला के माध्यम से कालजयी चरित्र का निर्माण करता है, प्रेमचंद इसलिए बड़े कथाकार हैं, क्योंकि उन्होंने होरी जैसे चरित्र का निर्माण किया है। रामेश्वर सिंह काश्यप भी इसी श्रेणी में आते हैं, इन्होंने लोहा सिंह रेडियो नाटक के माध्यम से 'लोहा सिंह' जैसे चरित्र का निर्माण किया और यह नाम इतना लोकप्रिय हुआ कि लोगों के मानस पटल से रामेश्वर सिंह काश्यप नाम गौण हो गया तथा लोहा सिंह नाम से लेखक का नाम प्रसिद्ध हो गया।

बीज शब्द : प्रहसन, वर्ग-चेतना, सांस्कृतिक आयोजन, प्रतिबंब, सिद्धहस्त, हास्य-नाटक।

मूल आलेख

कला का सम्बन्ध जितना समाज से है उतनी राजनीति से भी है। विद्वानों की आम धारणा है कि स्वस्थ राजनीति के द्वारा ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। प्रेमचंद कहते

हैं कि "साहित्य राजनीति के पीछे चलनेवाली चीज नहीं, उसके उसके आगे-आगे चलनेवाला 'एड्वान्स गार्ड' है"[1]। राजनीति जब भी अपने मार्ग से भटकी है, कला ने ही उसे संभाला है और सही मार्ग पर लाया है, एक सर्वश्रेष्ठ कला की यही पहचान भी होती है। कलाकार अपनी कला के माध्यम से समाज को सार्थक और संवेदनात्मक दिशा प्रदान करता है; इन सबके बावजूद अपनी राजनीति को भी प्रतिबिंबित करता है, जो कि उस कला में छुपी होती है। मार्क्स कहते हैं **"लेखक के विचार जितने छुपे रहें, कला की कृति उतनी ही अच्छी होती है"[2]**। वो अलग बात है कि समकालीन समय में यह धारा उल्टी दिशा में बहती दिख रही है अर्थात राजनीति कला को निर्धारित करने लगी है। ग्राम्सी के अनुसार 'कलाकार के सम्मुख भी एक राजनीतिक परिदृश्य अवश्य होता है,किन्तु किसी राजनीतिकर्मी के तुलना में वह कम नपा-तुला होता है, इसलिए वह कम कट्टर होता है'।

दरअसल, यहाँ बात बिहार के रहने वाले एक मुखर कलाकार की हो रही है जो भोजपुरी भाषा के प्रथम रेडियो नाटककार थे, जिनका नाम - रामेश्वर सिंह काश्यप हैं।

रामेश्वर सिंह काश्यप का जन्म 16 अगस्त 1927 को बिहार के रोहतास जिले में हुआ। इनका पैतृक गाँव सेमरा है जो कि सासाराम से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। चूँकि पिताजी एक पुलिस अधिकारी थे इसलिए उनके तबादले के साथ-साथ इन्हें भी अपनी प्रारंभिक शिक्षा भागलपुर तो कभी मुंगेर तो कभी पटना से पूरी करनी पड़ी। पिताजी के तबादले के बावजूद भी वे अपने अध्ययन का कार्य पूरी लगन से करते रहें। पूरी दुनिया रामेश्वर सिंह कश्यप जी को एक और नाम से जानते हैं, वह नाम है 'लोहा सिंह' बल्कि कहना यह चाहिए कि उनकी लोकप्रियता रामेश्वर सिंह काश्यप से नहीं अपितु लोहा सिंह के नाम से अधिक है। 1920-1930 के लगभग रेडियो पूरी कामयाबी के साथ बाज़ार में उतर चुका था; पटना में रेडियो स्टेशन की शुरूआत 1948 में हुई तब तक रेडियो के माध्यम से खबरें प्रसारित हो रही

थीं। उस समय काश्यप जी पटना विश्विद्यालय में बी. ए. के छात्र थे, एक सांस्कृतिक आयोजन में स्वरचित प्रहसन 'तसलवा तोर की मोर? 'की प्रस्तुति हुई। उपर्युक्त प्रहसन में एक चरित्र था 'लोहा सिंह', उसी समय इस चरित्र का प्रादुर्भाव हुआ। लोहा सिंह के चरित्र का अभिनय खुद काश्यप जी ने किया था।लोहा सिंह नाटक की लोकप्रियता इतनी बढ़ी की लोग पान की दुकानों पर भी भीड़ लगाकर नाटक को सुनने लगते थे। S.GAJRANI के शब्दों में **"Huge masses of people (not owning a radio set) will gather around "paan" (betel) shops in the evening to listen to the broadcast. Scenes and dialogues were mimicked by the masses for weeks.[3]"** इनके रिश्तेदार में एक रिटायर फौजी थे, यही फौजी चरित्र लोहा सिंह की बुनियाद बना। **"His creation.."Loha Singh"..centered around the character of a retired British Army veteran of that name and played by Kashyapji himself, was a regular weekly feature of AIR Patna."[4]**

इसी दौरान भोजपुरी हास्य नाटक लोहा सिंह का जन्म हुआ, बाद में इतनी प्रसिद्धि मिली कि लोहा सिंह सीरीज में 300 से अधिक नाटक सृजित और प्रसारित हुए। इस तरह लेखक का मूल नाम गौण होता गया और पूरी दुनिया काश्यपजी को 'लोहा सिंह' के नाम से जानने लगी।

राहुल सांकृत्यायन जब पटना आएं तो लोहा सिंह से काफी प्रभावित हुए। वे इन्हें सिद्धहस्त नाटककार मानते हैं। राहुल सांकृत्यायन कहते हैं"**यह भोजपुरी के बड़े ही सिद्धहस्त नाटककार हैं। विद्यार्थी अवस्था से ही बाबू लोहा सिंह के नाम से बड़े ही चुभते भोजपुरी एकांकी रेडियो के लिए लिखने लगे। नाटक में वह स्वयं लोहा सिंह बनकर बोलते हैं। रेडियो पर अनेक बार मैं उसका आनंद ले चुका था। कल मिलने पर मैंने स्वयं लोहा सिंह के मुँह से कुछ सुनने की**

इच्छा प्रकट की।.... प्रो० काश्यप ने अपने नाटक के कुछ अंश सुनाए। वहाँ और भी श्रोता जमा हो गये थे"[5]।

सन् साठ के भारत-चीन युद्ध के समय 'लोहा सिंह' नाटक की गूंज चीन तक पहुंची जिसे सुनकर चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री को कहने पर मजबूर होना पड़ा कि भारत ने लोहा सिंह नामक भैंसा पाल रखा है जो रेडियो के माध्यम से हमारे सैनिकों को डराता है.लोहा सिंह एक ऐसी शख्सियत है जिनके नाम का डंका विदेशों में भी बजता था।

नब्बे का दशक भारतीय राजनीति में धार्मिक वर्चस्व, सांप्रदायिक तनाव तथा कई महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ संक्रमण का काल रहा है; यह वही समय है जब सांप्रदायिक दंगे आग की तरह पूरे देश में फैल रहे थे। बिहार के दो शहर भागलपुर और सासाराम इस आग के लपेट में आ चुके थे, जिसका स्मरण मात्र ही रूह को कंपा देने वाली थी। धर्म, जिसे लोगों ने अपने सहूलियत के हिसाब से स्वीकारा तथा अस्वीकारा है, स्वयं के धर्म को श्रेष्ठ बताने के लिए काफी बहसें हुई हैं जो एक समय के बाद सांप्रदायिक दंगों का रूप ले रहे थे। प्रायः सभी धर्मों में अंधविश्वास और पाखंड दिखाई पड़ता है, उनके रीति-रिवाज, दर्शन, भी भिन्न हैं। हिन्दू धर्म में गाय पूजनीय है, तो इस्लाम धर्म में गाय का बलिदान जरूरी है। दुर्गा पूजा हो या सरस्वती पूजा, हिंदुओं को बैंड-बाजा के साथ जुलूस निकालना जरूरी है, लेकिन ये बात भी ध्यान में रखें कि सड़क या गली से जुलूस निकालते वक्त कहीं न कहीं मस्जिद भी आता है, और इस्लाम धर्म कहता है कि मस्जिद के आगे बाजा न बजे। इन्हीं सब बातों का नोक-झोंक आगे चलकर मनुष्य-मनुष्य में भेद प्रकट करता है, और देश के वरिष्ठ नेता भी इसे राष्ट्रीय मुद्दा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। इसका प्रचंड रूप 1989-1992 के समय को देख कर हमें समझ लेना चाहिए। कई बार ऐसा देखा जाता रहा है कि धर्म ने मनुष्यों को जितना दिया नहीं है उससे ज्यादा अमानुष्य को प्रकट कर अलगाव की स्थिति को उत्पन्न किया है तथा

स्वतंत्रता और बन्धुत्व के मध्य बाधा का काम किया है। लेखक की प्रतिबद्धता केवल लेखन कार्य तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए, ये कोशिश होनी चाहिए की जरूरत के अनुसार वो सड़कों पर उतरकर समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान कर लोगों में नई ऊर्जा का संचार करे। लोहा सिंह इस शर्त पर बखूबी उतरते हैं।

सांप्रदायिक दंगों को कैसे रोक जा सकता है?, ये एक बड़ा प्रश्न है। इसके समाधान की तरफ बढ़ते हुए आर्थिक सवालों पर ध्यान देना अतिआवश्यक है; दंगों में उन लोगों की संख्या ज्यादा दिखाई पड़ती है जिन्हें समाज में आर्थिक संकट का सामना विभिन्न स्तरों पर करना पड़ता है या कहें कि जिन्हें आर्थिक स्वतंत्रता नाम मात्र के लिए प्राप्त हो। लोगों की आर्थिक दशा इतनी खराब है कि कुछ चंद पैसों के लिए एक दूसरे को लहूलुहान कर देने से पीछे नहीं हटते हैं। समाधान के रूप में यह समझना जरूरी हो जाता है कि लोग धर्म, जाति जैसे सामाजिक बंधनों को तोड़कर मनुष्यता को बचाए रखने के लिए संगठित हों और लोगों में वर्गीय चेतना के विकास पर बल दें।इस जिम्मेदारी को लोहा सिंह ने अपने नाटकों के माध्यम से बखूबी किया है।

पूरी दुनिया में बहुत ही गिने-चुने नाम ही मिलेंगे, जिन्होंने अपने कला के माध्यम से बड़े चरित्र का निर्माण किया है। प्रेमचंद बड़े कथाकार इसलिए भी माने जाते हैं क्योंकि उन्होंने गोदान के माध्यम से ‘होरी’ जैसे कालजयी चरित्र का निर्माण किया है। होरी, जो कि पूरे भारतीय किसान और उनके जीवन संघर्ष का प्रतीक है। शरलक होम्स, जेम्स बौंड भी इसी प्रकार के चरित्र हैं। शेरलॉक होम्स उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध का एक काल्पनिक चरित्र है, जो पहली बार 1887 में प्रकाश में आया। वह ब्रिटिश लेखक और चिकित्सक सर आर्थर कॉनन डॉयल की उपज है। लंदन का एक प्रतिभावान 'परामर्शदाता जासूस", होम्स अपनी बौद्धिक कुशलता के लिए मशहूर है और मुश्किल मामलों को सुलझाने

के लिए अपने चतुर अवलोकन, अनुमिति तर्क और निष्कर्ष के कुशल उपयोग के लिए प्रसिद्ध है।

काश्यपजी हिंदी के प्रोफेसर के साथ-साथ, नाट्यमंचन, या कहें कि रंगमंच के प्रेमी व्यक्ति थे। तथापि उन्होंने जीवन को केंद्र में रखा, जीवन रुपी रंगमंच पर उन्होंने अपने अभिनय को जीया तथा लोगो को जीना सिखाया। कलाकार तो वे अपने छात्र जीवन से ही थे, फिर समाज रुपी रंगमंच पर लोगों को समझने में इन्हें देर नहीं लगती, समाज और लोगों के मनोभाव को समझने की उनमें अद्भूत कला थी। इनके नजदीकी मित्र रहे डॉक्टर व नाटककार स्व. जीतेंद्र सहाय के शब्दों में "**वह एक ऐसे लेखक थे, जिनके इर्द-गिर्द घटनाओं का संसार घूमता था। खुद घटनाओं को तलाश रहती थी कि कब वे उन्हें अपने ताने-बाने में गूंथ लें। वे हास्य के एक ऐसे ओदती थे कि ज्यादा पूँजी नहीं लगाकर भी उस क्षेत्र के एक बड़े व्यापारी बनने में सफल हुए"[6]।**

काश्यप जी 24 अक्टूबर 1992 को इस दुनिया को छोड़कर सदा के लिए चले गए, रामेश्वर सिंह काश्यप प्रोफेसर के पद से सन 1989 में सेवा निवृत हुए। 1992 में उन्हें पद्मश्री, बिहार रत्न, व बिहार गौरव से सम्मानित किया गया तथा 1990 से 92 तक भोजपुरी अकादमी के चेयर पर्सन रहें।

रामेश्वर सिंह काश्यप एक सफल और बड़े कलाकार थे। बतौर कलाकार, उन्होंने संकट की घड़ी में अपनी कला के माध्यम से अपने लोगों के मनोबल को बनाए रखा; सड़कों पर उतरकर सांप्रदायिक दंगों से आहात शहर को सकारात्मक संकल्प द्वारा गतिशील किया, तथा कलाकार के जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाया। रामेश्वर सिंह काश्यप उन सभी कलाकारों के लिए उदाहरण हैं जो समाज को बेहतर बनाने के स्वप्न को अपनी कृति में पिरोते हैं और उसके प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. प्रेमचंद. (2013) *कुछ विचार*. लोकभारती प्रकाशन: इलाहाबाद. पृ.83
2. मार्क्स-एंगेल्स. (2006) *साहित्य और कला*. राहुल फाउंडेशन: लखनऊ.पृ.92
3. GAJRANI, S. (2004) *HISTORY RELIGION & CULTURE OF INDIA*. ISHA BOOKS: page no.69
4. सांकृत्यायन, राहुल (2018) *मेरी जीवन यात्रा*(खंड-४). राधाकृष्ण प्रकाशन: दिल्ली. पृ.241
5. सिंह, गुरुचरण. *अभिव्यक्ति पत्रिका*, हिन्दी-सेवा-समिति, आर्य भूषण प्रेस, पृ.51